बी.के.जयश्रीबहेन,विक्रोली,मुंबई

२९ अगस्त ,राष्ट्रीय खेल दिननिमित्त :

मुल्यनिष्ठ संदेश प्रसार का माध्यम : खेल

२१ वी सदीमें खेल संस्कृति को बहुतही महत्व प्राप्त हो रहा है । क्योंकि खेल एक ऐसा विषय है जिसमें रंग,रुप,देश,धर्म,भाषा अपनी सिमायें लांघकर सिर्फ स्नेह मित्रता की बोली सहजातासे बोल सकता है और आनंद ,खुशी और उमंग ,उत्साह की लेन देन कर सकता है । खेल का महत्व समझकर पूरे विश्वमें उसका उपयोग अब दो देशोमें संबंध सुधारने के लिए, बिझनेस बढाने के लिए तथा अपनी देश की संस्कृति का प्रचारप्रसार कराने के लिए भी खेल यह एक प्रमुख मुद्दा बनता जा रहा है ।चीन और अमरिका पुराना शितयुध्द तथा भारत एवं चायना की दुश्मनी खत्म होने का आधार ' पींगपाँग पॉलीसी ' मतलब टेबलटेनीस खेल और खिलाडी है । वर्तमान समय कहा जा रहा है कि, भारतपाक के बीच का मतभेद क्रिक्केट के द्वारा दूर हो सकते है ।कई नामीग्रामी खिलाडी ॲडव्हर्टाइजमें या विशेष विषय के अम्बॅसेडर बने हुए नजर आते है । और सभीका ध्यान वे क्या कहते है उस तरफ जाता है । लोगों के लिए वे आदर्श बन जाते है । देश का नाम बाला करनेमें एवं देशभक्ति की अभिव्यक्ति करनेका भी माध्यम है खेल ।

खेलद्वारा देशप्रेम तथा स्वाभीमान,सत्याता,निर्भयता के अभिव्यक्ति की बात करें तो, मेजर ध्यानचंद सिंग जी का नाम सामने आता है, अन्य महापुरूषों की तरह उनका जन्मदिन, २९ अगस्त को 'राष्ट्रीय खेल दिन ' के रुपमें भारतमें मनाया जाता है । बात सिर्फ खेल की नही है परंतु मेजर ध्यानचंदजीने खेल माध्यमसे जिन मुल्योंको उजागर किया, देश उसकी सराहना करता है । देशको गौरान्वित करानेवाले इस हॉकी के जादूगरने, १९२८ ॲमस्टरडॅमें ,१९३२ लॉस एंजेलॉस तथा १९३६में बर्लिन ऑलिंपिकमें भारतको स्वर्ण पदक जिताकर देशका सन्मान बढाया था । कहा जाता है आस्ट्रीया तथा व्हिएन्ना देश के लोगोंने मेजर ध्यानचंदजी का चार हातवाला पुतला बनाकर ,चारो हाथोमें चार हॉकी स्टिक्स दिखायी थी । यह भारतीयों के लिए गौरव की बात रही ।उन्हें १९५६में भारत का 'पद्मभूषण' यह उच्च भारत नागरी पुरस्कार प्रदान किया गया ।

जर्मनीमें १९३६ के ऑलिंपिक हॉकीमें मेजर ध्यानचंदजी का करिश्मा देखने के लिए स्वयं अडॉल्फ हिटलरभी अपने देशवासीयोंके साथ गए थे । मेजर ध्यानचंदजी की समर्पणमयता को देखकर वे बहुतही प्रभावित हुए थे । हिटलरने उन्हें अपने देशमें कर्नल श्रेणी का पद प्रदान करना चाहा । परंतु उस देशभक्तने अपने देशप्रेम को बरकरार रखते हुए उसे नकारा । कहा जाता है की, खिलाडीओंद्वारा हिटलर को सलामी देते समय, मेजर ध्यानचंदजीने ,मानवता का संहार करनेवाले हिटलर को सलामी न देकर अपनी निर्भयता और मानवतावादी होने का सबूत दिया । आज खेल क्षेत्रमें भी भ्रष्टाचार और मुल्योंकी गिरावट की वजहसे डोपिंग का राक्षस खेल एवं देश का नाम बदनाम कर रहे है । खेलमें अध्यात्मिक मुल्य अत्याधिक है परंतू खिलाडी उनसे दूर है ।

हालहीमें २३ जून, यह दिन आंतर्राष्ट्रीय ऑलिंपिक दिन केरुपमें मनाया गया l इसी रितीसे खेल और खिलाडीओंका महत्व ऑलिंपिक प्रतियोगितामें नजर आता है l ऑलिपीक यह केवल कोई खेल प्रतियोगिता नही है बल्कि एक सर्वमान्य संस्कृति है l ऑलिपीक यह कडी मेहनत और प्रमाणिकतासे किए हुए परिश्रम तथा देश के सन्मान के लिए लिए खिलाडी अपना सबकुछ दावपे लगाने की तयारी करता है l ऑलिंपिक विश्व बंधूत्व के संस्कृति का परिचय देनेवाली संस्कृति है l उसका प्रदर्शन ऑलिंपीक के उद्घाटनपर दिखायी देता है l ऑलिंपिक ध्वजभी सफेद ध्वजपर लाल, काला, पिला, हरा, निला रंग की एकदुसरों में ऐसी ५ गोल कडियाँ दिखाते है; जो पाँच खंडोंका प्रतिनिधीत्व करता है l उस ध्वज के साथ ' हायर, फायर, स्ट्राँगर ' ऐसा संदेश दिलानेवाला स्लोगन का प्रचार होता है, जो उमंग, उत्साह तथा उन्नति के लिए प्रेरक है l

ऑलिंपिक प्रतियोगिता शुरू होनेसे पहले सभी खिलाडी अपने देश का सन्मान, खेलकी पवित्रता, प्रतियोगिता की गरिमा बनाये रखने के लिए वचनबध्द होते है l उद्घाटन कार्यक्रममें ज्योत प्रज्वलीत करने का कार्यक्रम सबसे ज्यादा रोमांचकारी होता l उदघाटन के समय हर देश अपनी कला संस्कृति , उन्नति ,शक्ति का भव्य प्रदर्शन करके विश्वपर अपना प्रभाव डालने का मौका लेता है l हर देशमें ज्योत प्रज्वलीत करने की अपनी अनोखी पध्दती होती है l असलमें यह ज्योत प्रज्वलन आत्माओंकी शांती, प्रेम एवं भाईचारा जैसी अध्यात्मिक भावना जागृत करना यह प्रमुख उद्देश होता है l इसकी तरफ ऐतिहासिक दृष्टीकोनसे देखा जाता है l १९८४ में लॉस एंजिलसमें ऑलिंपिक ज्योत प्रज्वलीत करनेवाले खिलाडीने अंतरिक्षयात्री का पोशाख करके अपने पीठपर गॅस के दो सिलींडर लगाकर उसके आधारसे वह गुब्बारेकी तरह उडकर ज्योत तक जा पहुँचे और ज्योत प्रज्वलीत की गयी l उसी तरह १९९२ ,बार्सिलोनामें तिरंदाज खिलाडीद्वारा दूरीसे अग्निबाण छोडकर ज्योत को प्रज्वलीत किया गया l हालहिमे चायनामे ऑलिंपिक हुए उसमें तारसे जुडे हुए जिमनॅस्ट खिलाडीने ७० फूट उंची छलांग लगाकर पूरे स्टेडियम को परिक्रमा लगाकर ज्योत प्रज्वलीत की l अब आगे २०१२ में लंडनमें ऑलिंपिक होने जा रहे है, इसलिए जैसे पूरे विश्व का खेल क्षत्र उसे के लिए व्यस्त होगया है l लेकिन उनकी तैय्यारीमें अगर खेल क्षत्रसे संबंधित व्यक्तिओंको अध्यात्मिक शिक्षाद्वारा ' माइंड कंडिशनींग ' की जाये तो, इस क्षत्रमें फैली हुई हेराफेरी, भ्रष्टाचार, डोपिंग जैसी प्रमुख समस्याओंसे खेल अंतर्गत मुल्योंका रक्षण होसकता है l

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com